

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीसीतालम्हणभरतशक्रहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीमद्रामायणे बाल्मीकीये आदिकार्ये अयोध्याकाण्डे  
॥ षोडशाधिकशततमः सर्गः ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीसीतालम्बणभरतशक्रघ्ननुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

## ॥ षोडशाधिकशततमः सर्गः ॥

बृद्धेन कुलपतिना सह बहूनां मुनीनां चित्रकूटं त्यक्त्वान्यास्मिन्नाश्रमे  
गमनम्

प्रतियाते तु भरते रसन् रामस्तदा बने।  
लक्ष्यामास सोद्वेगमथोऽसुक्यं तपस्विनाम् ॥ 2.116.1 ॥

ये तत्र चित्रकूटस्य पुरस्तात् तापसाश्रमे।  
राममाश्रित्य निरतास्तानलक्ष्यदुःसुकान् ॥ 2.116.2 ॥

नयनैर्ऋकुटीभिश्च रामं निर्दिश्य शङ्किताः।  
अन्योन्यामुपजल्लुप्तः शनैश्चक्रुर्मिथः कथाः ॥ 2.116.3 ॥

तेषामौऽसुक्यमालक्ष्य रामस्त्राअनि शङ्कितः।  
कृताञ्जलिरुराचेदमृषिं कुलपतिं ततः ॥ 2.116.4 ॥

न कश्चिद् भगरन् किञ्चिद् पुरं ब्रुवामिदं मयि।  
दृश्यते रिकृतं येन रिक्रियन्ते तपस्विनः ॥ 2.116.5 ॥

प्रमादात्तरितं किञ्चिद् कच्चिन्नाररजस्य मे।  
लम्बणस्यर्षिभिर्दृष्टं नानुरूपं महाअनः ॥ 2.116.6 ॥

कच्चिच्छुश्रूषमाणा रः शुश्रूषणपरा मयि।  
प्रमदाद्भ्युचितां ब्रुतिं सीता युक्तां न रतते ॥ 2.116.7 ॥

অথর্ষির্জরযা বৃদ্ধস্তপসা চ জরাং গতঃ।  
 রেপমান ইরোরাচ রামং ভূতদযাপরম্ ॥ 2.116.8 ॥

কুতঃ কল্যাণসত্ত্বায়াঃ কল্যাণাভিরতেঃ সদা।  
 চলনং তাত রৈদেহ্যাস্তপস্বিশু রিশেষতঃ ॥ 2.116.9 ॥

ৎরন্নিমিত্তমিদং তারং তাপসান্ প্রতি র্ততে।  
 রক্ষোভ্যস্তেন সংরিগ্নাঃ কথযন্তি মিথঃ কথাঃ ॥ 2.116.10 ॥

রারণাররজঃ কশ্চিৎ খরো নামেহ রাক্ষসঃ।  
 উৎপাট্য তাপসান্ সর্বাঞ্জনস্থাননিরাসিনঃ ॥ 2.116.11 ॥

ধৃষ্টশ্চ জিতকাশী চ নৃশংসঃ পুরুষাদকঃ।  
 অরলিপ্তশ্চ পাপশ্চ ত্বাং চ তাত ন মৃষ্যতে ॥ 2.116.12 ॥

ৎরং যদাপ্রভৃতি হস্মিন্নাশ্রমে তাত র্তসে।  
 তদাপ্রভৃতি রক্ষাংসি রিপ্ৰকুরন্তি তাপসান্ ॥ 2.116.13 ॥

দর্শযন্তি হি বীভৎসৈঃ ক্রুরৈর্ভীষণকৈরপি।  
 নানারূপৈরিরূপৈশ্চ রূপৈরসুখদর্শনৈঃ ॥ 2.116.14 ॥

অপ্রশস্তৈরশুচিভিঃ সম্প্রযুজ্য চ তাপসান্।  
 প্রতিঘ্নন্ত্যপরান্ ক্ষিপ্ৰমনার্যাঃ পুরতঃ স্থিতান্ ॥ 2.116.15 ॥

তেষু তেত্রাশ্রমস্থানেত্রবুদ্ধমরলীয চ।  
 রমন্তে তাপসাংস্তত্র নাশযন্তোহল্লচেতসঃ ॥ 2.116.16 ॥

অরক্ষিপন্তি স্রগ্ভাণানগ্নীন্ সিঞ্চন্তি রারিণা।  
 কলশাংশ্চ প্রমর্দন্তি হরনে সমুপস্থিতে ॥ 2.116.17 ॥

তৈর্দুরাত্মভিরারিষ্টানাশ্রমান্ প্রজিহাসরঃ।  
 গমনাযান্যদেশস্য চোদযন্ত্যষযোহদ্য মাম্ ॥ 2.116.18 ॥

তৎ পুরা রাম শারীরীমুপহিংসাং তপস্বিষু।  
দর্শযন্তি হি দুষ্টাস্তে ত্যক্ষ্যাম ইমমাশ্রমম্ ॥ 2.116.19 ॥

বহুমূলফলং চিত্রমরিদুরাদিতো বনম্।  
অশ্রস্যাশ্রমমেরাহং শ্রযিষ্যে সগণঃ পুনঃ ॥ 2.116.20 ॥

খরস্তুয্যপি চায়ুক্তং পুরা রাম প্রবর্ততে।  
সহাস্মাভিরিতো গচ্ছ যদি বুদ্ধিঃ প্রবর্ততে ॥ 2.116.21 ॥

সকলত্রস্য সন্দেহো নিত্যং যুক্তস্য রাঘর।  
সমর্থস্যাপি হি সতো রাসো দুঃখমিহাদ্য তে ॥ 2.116.22 ॥

ইত্যুক্তরত্তং রামস্তং রাজপুত্রস্তপস্বিনম্।  
ন শশাকোত্তরৈরীকৈরবদ্ধং সমুৎসুকম্ ॥ 2.116.23 ॥

অভিনন্দ্য সমাপৃচ্ছ্য সমাধায় চ রাঘরম্।  
স জগামাশ্রমং ত্যক্ত্বা কুলৈঃ কুলপতিঃ সহ ॥ 2.116.24 ॥

রামঃ সংসাধ্য ঋষিগণমনুগমনাদ্  
দেশাৎ তস্মাৎ কুলপতিমভিরাদ্য ঋষিম্।  
সম্যকপ্রীতৈস্তৈরনুমত উপদিষ্টার্থঃ  
পুণ্যং রাসায় স্ননিলযমুপসম্পেদে ॥ 2.116.25 ॥

আশ্রমমৃষিরিরহিতং প্রভুঃ  
ক্ষণমপি ন জহৌ স রাঘরঃ।  
রাঘরং হি সততমনুগতা -  
স্তাপসাশ্চাৰ্ষচরিতে ধৃতগুণাঃ ॥ 2.116.26 ॥

॥ ইত্যর্ষে শ্রীমদ্রামায়ণে রান্মীকীয়ে আদিকাৰ্যে  
অযোধ্যাকাণ্ডে ষোড়শাধিকশততমঃ সর্গঃ ॥